Dr•Navin Chandra Sharma
Assistant Professor
Dept of psychology
Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh College Ara

Date; 17/02/2026

Class: P.G Semester - 4th

Clinical Psychology,

Topic :-

व्यवहारात्मक मॉडल का मूल्यांकन **(Evaluation of Behavioral model):**

व्यवहारमक मॉडल को ने व्यवहारों की उत्पत्ति, संपोषण एवं परिमार्जन की व्याख्या करने का एक सर्वोत्तम मॉडल माना गया है। इस मॉडल के कुछ लाभ या गुण (advantages) निम्न हैं-

(i) इस मॉडल द्वारा व्यवहार की उत्पत्ति, संपोषण (maintenance) एवं परिमार्ज की व्याख्या वस्तुनिष्ठ एवं प्रयोगात्मक ढंग से की गई है। इस कारण इस मॉडल में विश्वसनीयता तथा वैद्धता अधिक है।

(ii) इस मॉडल में जितने भी प्रमुख संप्रत्ययों का समावेश किया गया है उन्हें आनुभविक ढंग से परिभाषित किया गया है। इस मॉडल में अन्तरामानसिक व्याख्याओं (intrapsychic explanations) को जिसका भरमार हमें मनोगात्यात्मक मॉडल में मिलता है, को पूर्णतः अस्वीकृत कर दिया है। इससे भी व्यवहारात्मक मॉडल में वस्तुनिष्ठता काफी बढ़ी है।
(iii) व्यवहारात्मक मॉडल अपने क्षेत्र के प्राप्त आनुभाविक आँकड़ों (empirical data) पर ही विभिनन तरह के नियमों एवं सिद्धान्तों को आधारित किया है। इसका परिणाम यह होता है कि मॉडल की उपयुक्तता (appropriation) में वृद्धि हो जाती है।

(iv) व्यवहारात्मक मॉडल अपने कार्य-विधि का मूल्यांकन तरह-तरह के अनुसंधानों द्वारा करता है। इससे मॉडल की बाहय वैद्धता (external validity) में काफी वृद्धि हुई है।

इन लोगों के बावजूद भी व्यवहात्मक मॉडल के कुछ परिसीमाएँ (limitation) हैं जिनमें निम्न प्रमुख है-

(i) व्यवहारात्मक मॉडल में वैयक्तिक व्यवहार की व्याख्या तो की जाती है परंतु स्वयं की उपेक्षा की जाती है। सचमुच में इस मॉडल में मानव को अर्जित अनुक्रियाओं का जो वातावरण के साथ यांत्रिक संबंध (mechanistic relationship) से वनता है, का एक सेट समझा जाता है जो स्पस्टतः एक सर्कीर्ण विचार धारा है क्योंकि इसमें जननिक (genetic), दैहिक तथा अन्य अनाधि गम प्रभावों (non learning influences) की पूर्ण उपेक्षा होती है।

(ii) व्यवहारात्मक मॉडल द्वारा सिर्फ मापनीय व्यवहार की व्याख्या होती है। स्पष्टतः मानवीय व्यवहार वैसे व्यवहार होते हैं जो सरल होते हैं तथा जिसमें साधारण उद्दीपक अनुक्रिया संबंध होते हैं। इस मॉडल द्वारा जटिल व्यवहार एवं वैसे व्यवहार जिनका स्वरूप बाहयकय आन्तरिक ज्यादा होता है, की व्याख्या नहीं हो पाती है। जैसे इस मॉडल द्वारा दुर्मिति व्यवहार (Phobic behaviour) का अध्ययन तो हो सकता है क्योंकि इसका स्वरूप सरल होता है परंतु इसके द्वारा किसी प्रियजन की मृत्यु से उत्पन्न मानसिक तकलीफ की व्याख्या नहीं हो पाती है क्योंकि इसका स्वरूप न केवल जटिल है बल्कि आंतरिक भी है।

(iii) व्यवहारात्मक मॉडल की एक अन्य प्रमुख परिसीमा यह बतलायी गयी है कि यह मॉडल सीखने के जिन नियमों पर आधारित है। वे स्वयं ही न तो उत्तम ढंग से स्थापित है और न ही उनके वारे में मनोवैज्ञानिकों के वीच मतैक्यती है। जैसे अभी भी इस विन्दु पर मतैक्यता मनोवैज्ञानिको के बीच नहीं है कि सीखने की प्रक्रिया में पुर्नवलन की क्या भूमिका होती है। यह भी आलोचक मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि व्यवहारवादियों द्वारा पशु प्रयोगशाला में प्राप्त तथ्य कहाँ तक मानव प्रयोज्यों के लिए सही होंगे, कहना मुश्किल है।

(iv) व्यवहारात्मक मॉडल में जो भी कार्य विधि (procedures) एवं परीक्षण का उपयोग किया जाता है, वे वैज्ञानिक कम हैं तथा उतने वैद्ध भी नहीं हैं जितना कि व्यवहारात्मक मॉडल के समर्थकों का दावा है। आलोचकों का दावा है कि इस मॉडल के बहुत सारे मूल्यांकन एवं उपचार संबंधी कार्यविधि नैदानिक अनुभूतों पर आधारित है न की प्रयोगात्मक शोध पर। अतः उनसे किसी प्रकार का ठोस सामान्यीकरण (Concrete generalization) का उम्मिद नहीं करना चाहिए।

इन सीमाओं के वावजूत भी व्यवहारात्मक मॉडल नैदानिक मनोविज्ञान का एक ऐसा प्रमुख मॉडल है जिसकी अवहेलना आज भी कोई नैदानिक मनोवैज्ञानिक नहीं कर पाते हैं।